By
Rahul Kumar Jha
Dept.of Political Science

Lecture-1

Topic – Pressure Groups

Class – B.A. degree-I (Sub.)

Subject – Political Science

Date – 21Dec.,2020

By Rahul Kumar Jha.

विश्व के प्रायः प्रत्येक देश में समान हितवाले व्यक्ति अपने को समूहों में संगठित करके अपने विभिन्न हितों एवं स्वार्थों की रक्षा करने का प्रयास करते हैं। साधारण भाषा में इन्हें दबाव-समूह या हित-समूह कहा जाता है। दबाव-समूह आधुनिक लोकतंत्र के अभिन्न अंग हैं। आज के लोकतंत्रीय देशों में विभिन्न राजनीतिक दलों के विकास के साथ-साथ दबाव-समूहों या हित समूहों का भी विकास हुआ है। प्रायः विश्व के सभी विकसित तथा अविकसित देशों में दबाव-समूह राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

यह भी सही है कि मानव की संगठित प्रतिक्रिया को अभिव्यक्त करने में राजनीतिक दलों का उदय पहले हुआ, लेकिन दबाव गुटों के

अस्तित्व को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। प्रो. फाइनर ने इन दबाव समूहों को 'अज्ञात साम्राज्य' की संज्ञा दी है। इनकी उपयोगिता इस दृष्टि से बढ़ गई है कि वे राजनीतिक दलों की तरह सत्ता को प्राप्त करना नहीं चाहते, वरन सत्तारूढ़ दल की नीतियों को अपने पक्ष में प्रभावित करना चाहते है।

दबाव समूहों का विकास :-

राजनीति में दबाव एवं हित-समूह अमेरिकी राजनीतिक व्यवस्था की देन हैं। वैसे तो अमेरिकी गणतंत्र की स्थापना के साथ ही ये पैदा हो गए थे, लेकिन इनकी स्पष्ट भूमिका २०वीं शताब्दी में दिखने लगी। 1788 में अमेरिका में संघात्मक पत्रों के आधार पर इसके लेखकों ने दबाव के गुट की स्वीकृति चाही थी और 1846 ई. में ब्रिटिश एंटीकोर्न लॉ (Anticorn Law) ने इस संबन्ध में अपूर्व सफलता प्राप्त की थी। 1908 ई० में प्रकाशित आर्थर बेंटले की पुस्तक 'दि प्रोसेस ऑफ गवर्नमेंट (The Process of Government) को ले सकते है जिसमें दबाव एवं हित-समूहों पर सर्वप्रथम क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। फिर भी, २०वीं सदी

के पूर्वार्द्ध तक इसका अध्ययन अमेरिकी स्थिति तक ही सीमित रहा। जहां तक ब्रिटेन का प्रश्न है, दबाव एवं हित-समूहों पर 1950 ई० के आसपास से रुचि ली जाने लगी। भारत में इनका विकास स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से हुआ। आज के राजनीतिक क्षेत्र तथा नीति-निर्धारण-प्रक्रिया में इनका प्रभाव दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है।

दबाव-समूह की परिभाषा-

मायरन वीनर - दबाव समूह से तात्पर्य ऐच्छिक रूप से संगठित ऐसे समुदाय से है जो प्रशासकीय ढाँचे से बाहर रहकर प्रशासकीय अधिकारियों के निर्वाचन, मनोनयन तथा सार्वजनिक नीति के निर्माण एवं क्रियान्वयन को प्रभावित करने का प्रयत्न करता है।

आमंड एवं पावेल - हित समूह से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों के उस समूह से है जो आपस में कार्य-व्यापार तथा लाभ के बन्धनों से जुड़े हैं और जिन्हें इन बन्धनों की जानकारी भी रहती है।

अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि "हित एवं दबाव-समूह उन व्यक्तियों का एक ऐसा संगठित या सामयिक समूह है जो पारस्परिक कार्य-व्यापार तथा लाभ के बन्धनों से जुड़े हैं और वे हमेशा उन कार्यों को करते हैं जो हित-समूह में रहने के नाते उन्हें करने चाहिए।

CHAPTER CONTINUES....